"ड्रग डिस्कवरी, डेवलपमेंट एवं ड्रग डिलीवरी" विषयक तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय, लखनऊ के फार्मेसी संकाय द्वारा "ड्रग डिस्कवरी, डेवलपमेंट एवं ड्रग डिलीवरी" विषय पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन दिनांक 17 से 19 नवंबर 2025 तक विश्वविद्यालय परिसर में सफलतापूर्वक किया गया।

इस सम्मेलन का उद्देश्य दवा खोज, विकास तथा आधुनिक ड्रग डिलीवरी प्रणालियों में हो रहे नवीन अनुसंधान, तकनीकी प्रगति एवं अकादमिक–उद्योग सहयोग पर व्यापक विमर्श करना रहा। सम्मेलन में देश एवं विदेश के प्रतिष्ठित शिक्षाविदों, वैज्ञानिकों, फार्मा उद्योग विशेषज्ञों तथा विनियामक क्षेत्र से जुड़े विद्वानों ने सहभागिता की।

1. उद्घाटन सत्र (17 नवंबर 2025)

सम्मेलन के प्रथम दिवस दिनांक 17 नवंबर 2025 को प्रातः 10:20 बजे माँ सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन एवं कुलगीत के साथ उद्घाटन सत्र का शुभारंभ हुआ। सम्मेलन की रूपरेखा निदेशक एवं सम्मेलन समन्वयक प्रो. शालिनी त्रिपाठी द्वारा प्रस्तुत की गई।

उन्होंने अवगत कराया कि सम्मेलन में भारत के 15 शहरों के 29 महाविद्यालयों सहित 5 से अधिक देशों से आए 300 से अधिक प्रतिभागियों ने पंजीकरण कराया। सम्मेलन के अंतर्गत 20 विशिष्ट वक्ताओं के व्याख्यान आयोजित किए गए तथा कुल 77 शोध प्रस्तुतियाँ सम्पन्न हुईं, जिनमें 62 पोस्टर एवं 15 ओरल प्रस्तुतियाँ सम्मिलित रहीं।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. अजय तनेजा ने की। अपने अध्यक्षीय संबोधन में उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में भाषा के साथ-साथ तकनीक, विधि एवं फार्मेसी जैसे व्यावसायिक पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं तथा फार्मेसी स्वास्थ्य क्षेत्र का एक सशक्त स्तंभ है। इस अवसर पर सम्मेलन की प्रोसीडिंग का औपचारिक अनावरण भी अतिथियों द्वारा किया गया।

2. की-नोट एवं आमंत्रित व्याख्यान

सम्मेलन में की-नोट एड्रेस प्रो. सर्ज मिगनानी (पूर्व प्रोफेसर, यूनिवर्सिटी ऑफ पेरिस डेसकार्टेस, फ्रांस) द्वारा प्रस्तुत किया गया। उन्होंने फार्मेसी शिक्षा एवं अनुसंधान में बहु-विषयक दृष्टिकोण अपनाने पर बल दिया।

विशिष्ट अतिथि श्री ए. मनीकंदन (आई.ए.एस.), उपाध्यक्ष, बी.डी.ए., बरेली ने सस्ती, सुरक्षित एवं प्रभावी दवाओं के विकास की आवश्यकता पर बल दिया। इसके उपरांत डॉ. जे. एन. वर्मा, प्रबंध निदेशक, लाइफकेयर इनोवेशन लिमिटेड ने ब्लैक फंगस जैसी गंभीर बीमारियों के उपचार हेतु नवीन तकनीकों एवं फार्मास्यूटिकल मैन्युफैक्चरिंग की व्यावहारिक चुनौतियों पर प्रकाश डाला।

मुख्य अतिथि डॉ. जी. एन. सिंह, पूर्व ड्रग कंट्रोलर ऑफ इंडिया एवं माननीय मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश के वैज्ञानिक सलाहकार ने भारत को फार्मास्यूटिकल क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने पर बल देते हुए फार्मा पार्क एवं मेडिकल डिवाइस पार्क की स्थापना की जानकारी साझा की।

3. वैज्ञानिक सत्र

प्रथम दिवस में "Industry–Academia: Bridging the Gap" विषयक वैज्ञानिक सत्र आयोजित किया गया, जिसकी अध्यक्षता डॉ. पी. एम. एस. चौहान एवं डॉ. विशाल भार्गव द्वारा संयुक्त रूप से की गई। इस सत्र में प्लेनरी, की-नोट एवं आमंत्रित व्याख्यान प्रस्तुत किए गए।

द्वितीय वैज्ञानिक सत्र "AI and Novel Technologies for Drug Discovery" विषय पर केंद्रित रहा, जिसकी अध्यक्षता प्रो. वी. के. खन्ना एवं डॉ. आमिर नाज़िर द्वारा की गई। इस सत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सस्टेनेबल केमिस्ट्री एवं आधुनिक ड्रग डिजाइन पर महत्वपूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत हुए।

सम्मेलन के दौरान समानांतर सत्रों में प्रो. सर्ज मिगनानी एवं डॉ. पी. पी. सिंह की अध्यक्षता में अनेक ओरल एवं पोस्टर प्रस्तुतियाँ दी गईं।

4. सहभागिता एवं आँकड़े

तीन दिवसीय सम्मेलन में कुल 6 अंतरराष्ट्रीय वक्ताओं, 22 विशिष्ट आमंत्रित वक्ताओं एवं 16 रिसोर्स विशेषज्ञों ने सहभागिता की। सम्मेलन के अंतर्गत 10 वैज्ञानिक सत्र, 2 ओरल एवं 2 पोस्टर प्रस्तुति सत्र, एक पैनल चर्चा का आयोजन किया गया। कुल 316 प्रतिभागियों ने 29 महाविद्यालयों एवं 15 शहरों से सहभागिता की।

5. समापन समारोह

समापन समारोह की अध्यक्षता माननीय कुलपति प्रो. अजय तनेजा द्वारा की गई। इस अवसर पर बेस्ट ओरल प्रस्तुति पुरस्कार अन्किमा यादव को, बेस्ट यंग रिसर्चर पुरस्कार डॉ. श्वेता जैन को तथा बेस्ट पोस्टर पुरस्कार नैना श्रीवास्तव एवं कृतिमा चौधरी को प्रदान किए गए।

कुलपति ने सम्मेलन के सफल आयोजन हेतु आयोजन समिति को बधाई दी। आयोजन समिति में प्रो. शालिनी त्रिपाठी, प्रो. पुष्पेन्द्र त्रिपाठी, डॉ. धर्मेन्द्र सिंह, डॉ. अमृता यादव, डॉ. शुभम रस्तोगी, डॉ. आनंद कुमार सहित 40 से अधिक शिक्षकों, शोधार्थियों एवं स्वयंसेवकों की सक्रिय सहभागिता रही।

6. निष्कर्ष

यह अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन अंतर्विषयक शोध, ज्ञान-साझाकरण तथा अकादमिक–उद्योग सहयोग को सुदृढ़ करने में अत्यंत सफल रहा। सम्मेलन से फार्मेसी शिक्षा एवं अनुसंधान के क्षेत्र में सुरक्षित, प्रभावी एवं किफायती दवाओं के विकास की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान प्राप्त हुआ।

ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय, लखनऊ
Khwaja Moinuddin Chishti Language University, Lucknow
(Uttar Pradesh State Government University)

पाँच तकनीकी सत्रों में शोध और नवाचार पर हुई विस्तृत चर्चा

अवधनामा संवाददाता

लखनऊ। ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय, लखनऊ के फार्मेसी संकाय द्वारा दवा खोज, विकास एवं औषधि वितरण-2025 (ICDS-2025) विषयक तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन 17 से 19 नवम्बर 2025 तक विश्वविद्यालय के अटल हॉल में किया जा रहा है। इस सम्मेलन में देश-विदेश के विद्वान शिक्षाविद, वरिष्ठ वैज्ञानिक, शोधकर्ता तथा प्रतिष्ठित औषधि उद्योगों के विशेषज्ञ आधुनिक फार्मेसी, नयी अनुसंधान प्रवृत्तियों और उभरती तकनीकों पर अपने विचार साझा कर रहे हैं। पूरे आयोजन का संचालन माननीय कुलपति प्रो0 अजय तनेजा एवं संयोजन भेषजी विभाग की डायरेक्टर प्रो0 शालिनी त्रिपाठी के नेतृत्व में किया जा रहा है।

18 नवम्बर को आयोजित वैज्ञानिक गतिविधियों के अंतर्गत विभिन्न विषयों पर पाँच तकनीकी सत्र संपन्न हुए, जिनमें औषधि विकास, जैव-प्रौद्योगिकी, नैनो-चिकित्सा तथा सटीक औषधि-प्रेषण प्रणालियों पर व्यापक विचार-विमर्श किया गया।

प्रथम सत्र : औषधि विकास एवं प्राकृतिक स्रोतों पर आधारित अनुसंधान इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. सारिका सिंह (वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीडीआरआई) ने की।

सी-मैप के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एन. पी. यादव ने प्राकृतिक औषधियों के विकास पर अपना मुख्य व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए बताया कि लैवेंडर के आवश्यक तेल तथा उसके प्रमुख तत्व लीनालूल और लीनालाइल एसीटेट IMQ- प्रेरित सोरायसिस के उपचार में प्रभावी पाए गए हैं, जो त्वचा संबंधी रोगों के लिए इसके वैज्ञानिक उपयोग की पुष्टि करता है। इस शोध के लिए उन्हें वर्ष 2019 में विशेष वैज्ञानिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। डॉ. शशांक सिंह (भारतीय एकीकृत औषधीय संस्थान, जम्मू) ने प्राकृतिक यौगिकों से कैंसर की जटिल किस्मों के लिए लक्षित उपचार विकसित करने पर प्रकाश डाला। प्रो. गौरव कैथवास (बीबीएयू, लखनऊ) ने आधुनिक शोध में सत्य, विश्वास और तकनीक की अपरिहार्यता पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

लखनऊ, 24 नवंबर, 2025 दैनिक जागरण

एक नजर में

डा. शुभम और डा. सौम्या को मिला यंग रिसर्चर सम्मान

लखनऊ : ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय के फार्मेसी संकाय की ओर आयोजित सात दिवसीय इंटरनेशनल कांफ्रेंस आनइंग डिस्कवरी, डेवलपमेंट एंड ड्रग डिलीवरी का समापन हो गया। इस अवसर पर देश विदेश के विज्ञानियों ने दवा अनुसंधान, नवाचार और नियामक विज्ञान पर व्यापक चर्चा की। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के फार्मेसी संकाय के शिक्षक डा. शुभम रस्तोगी को यंग रिसर्चर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान पीएचडी–2 एंजाइम के सक्रियण पर किए गए शोध कार्य के लिए दिया गया। वहीं, लखनऊ विश्वविद्यालय के फार्मेसी संकाय की डा. सौम्या सिंह को यंग रिसर्चर रिकांग्निशन पुरस्कार दिया गया। वि.

amarujala.com/lucknow

my city

लखनऊ | सोमवार • 24.11.2025

अमर उजाला 7

लखनऊ विवि की डॉ. सौम्या सिंह और भाषा विवि के डॉ. शुभम को अवॉर्ड

लखनऊ। ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय के फार्मेसी संकाय में चल रहे तीन दिवसीय इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन ड्रग डिस्कवरी का रविवार को समापन हो गया। कुलपति प्रो. अजय तनेजा की अगुवाई में हुए सम्मेलन में देश-विदेश से आए प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों ने दवा अनुसंधान, नवाचार आदि पर विस्तृत चर्चा की। लखनऊ विश्वविद्यालय की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. सौम्या सिंह को यंग रिसर्चर रिकॉग्निशन अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। डॉ. सौम्या ने शोध 'डायबेटिक रेटिनोपैथी' पर व्याख्यान दिया। यह शोध हाल ही में एससीआई जर्नल में प्रकाशित हुआ है। उनके शोध का मुख्य फोकस मधुमेहजनित आंखों की गंभीर जटिलता-डायबेटिक रेटिनोपैथी के लिए प्रभावी नैनोफार्म्यूलेशन विकसित करना है, जो आंखों की दृष्टि हानि को रोकने में सहायक हो सकता है। इसके अलावा डॉ. शुभम रस्तोगी को उत्कृष्ट शोध कार्य के लिए यंग रिसर्चर अवॉर्ड से नवाजा गया। यह अवार्ड उन्हें स्तन कैंसर के उपचार में पीएचडी-टू एंजाइम के सक्रियण पर उनके शोध के लिए मिला। फार्मेसी जगत में विशिष्ट योगदान के लिए स्टेट ड्रग मैन्युफैक्चरिंग एसोसिएशन के मैनेजिंग डायरेक्टर वीर अंजनी सक्सेना को सम्मानित किया गया। (माई सिटी रिपोर्टर)

लखनऊ विवि की डॉ. सौम्या सिंह को मिला यंग अचीवर्स रिकॉग्निशन अवॉर्ड। स्रोत : विवि

TUESDAY, NOVEMBER 18, 2025

UP's pharmaceutical sector to get pharma park, med device hub

TIMES NEWS NETWORK

Lucknow: Uttar Pradesh govt is set to establish a strong footprint in the pharmaceutical sector, with major projects including a 5000-acre pharma park near Lalitpur and a 350-acre medical device manufacturing hub in Noida.

This was said by former Drug Controller of India and scientific adviser to the Chief Minister of Uttar Pradesh, GN Singh while speaking at a three-day international conference on Drug Discovery, Development and Drug Delivery organised by the faculty of pharmacy at Khwaja Moinuddin Chishti Language University on Monday.

MAJOR BOOST

"These projects are designed to bring UP to the forefront of India's pharmaceutical and medical technology revolution. The upcoming infrastructure would not only attract top-tier companies but also foster a vibrant innovation ecosystem," he told the gathering of researchers, academicians, and industry leaders.

He added that: "The 5000-acre pharma park will serve as a one-stop destination for manufacturing, research and formulation technologies. Similarly, the medical device manufacturing hub in Noida will be a game-changer in reducing India's dependence on imported equipment and boosting indigenous capability."

Singh added that the state's vision is aligned with national goals of self-reliance and technological advancement in healthcare.

"These initiatives will empower our scientists, strengthen regulatory support and create an environment where high-quality, affordable medicines and devices can be developed within the state," he added.

The conference also featured discussions on next generation drug delivery systems, novel therapeutic approaches, and the importance of academic-industry collaboration.

Experts highlighted the need for skilled manpower and advanced research facilities to match the pace of global pharmaceutical developments.